आज दिल खोल कर चुदूँगी-12

“मुझे नाश्ता देने आया लड़का बांका जवान था, उसे देखते ही मेरी चूत गर्म हो गई, मैंने उसे अपने चूतड़ और चूत दिखा कर पटा लिया और अपनी चूत में उसका मजेदार लंड ले लिया. ...”

Story By: neha rani (neharani)
Posted: Saturday, January 2nd, 2016
Categories: कोई मिल गया
Online version: आज दिल खोल कर चुदूँगी-12

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

आज दिल खोल कर चुदूँगी-12

अब तक आपने पढ़ा..
मैंने एक झटके से विनय के मोटे तगड़े और खड़े लण्ड को पकड़ लिया।
‘यह है केला.. अब जल्दी से निकालो और खिलाओ।’
विनय को भी अब चुदास चढ़ गई थी और वो भी नाटक करते हुए बोला- मेमसाब यह केला मुँह से खाने के लिए नहीं है।

मैं तुरंत विनय का हाथ पकड़ कर ले जाकर सीधे अपनी गरम चूत पर रख कर दबाते हुए बोली- इसे खिलाना है। अब तो केला खाने की सही जगह है ना..
विनय ने मेरी बुर को चापते हुए कहा- जी मेमसाब.. लेकिन कोई आ गया तो ?
मैं सिसियाते स्वर में कराही- आह्ह्ह.. आआह्ह्ह्ह.. नहीं विनय कोईई.. नहींई.. आएगा.. तुम इत्मीनान से खिलाओ अपना केला.. यह मेरी चूत इसको आराम से खा लेगी।

अब आगे..

‘मेमसाब.. आपको मैं अपना केला जरूर खिलाऊँगा।’
‘क्या तुम मेमसाब मेमसाब.. किए जा रहे हो.. मेरा नाम नेहा है और प्यार से सब रानी भी कहते हैं। तुमको जो अच्छा लगे तुम बुला सकते हो।’
‘जी रानी जी..’ कहते हुए उसने मेरी बुर में उंगली डाल कर एक हाथ से मेरी चूची को पकड़ कर सहलाते हुए खड़ा रहा।

शायद विनय चाह रहा था कि मैं खुद आगे बढ़ूँ..
फिर मैं विनय के सर को पकड़ कर नीचे कर के अपने होंठों पर रख कर एक जोरदार किस करके विनय को अपने दूधों की तरफ ले गई और अपनी चूची के अंगूरों को चूसने के लिए

बोली।
विनय मेरी छाती को भींच कर पीते हुए मेरी चूत को अपनी मुठ्ठी भरकर दबाते हुए मेरी चूचियों को पीने में मस्त था।

तभी मैंने विनय के लण्ड को बाहर निकाल लिया, उसका लण्ड बाहर आते ही हवा में झूल गया.. जैसे कोई गदहा अपना लण्ड झुला रहा हो।
विनय का लण्ड देख कर मेरी मुँह में पानी भर आया और मैंने मुँह खोल के विनय के लण्ड को मुँह में भर लिया पर विनय का सुपारा काफी मोटा था.. जो मेरे मुँह में भर गया और मुझे चूसने में दिक्कत हो रही थी।

इधर विनय मेरी चूत को सहलाते हुए कभी उंगली अन्दर पेल देता.. कभी मेरी बुर को भींच लेता। मैं विनय के लण्ड की चमड़ी को आगे-पीछे करते हुए पूरे गले तक डाल कर लण्ड को को मुठियाते हुए चूसे जा रही थी।

तभी विनय मेरा मुँह लण्ड से हटाकर सीधे मुझे बिस्तर पर गिरा दिया। उसने मेरी चूत के ऊपर पर मुँह लगा कर पूरी बुर को मुँह में भर लिया। अब उसने बुर को खींचकर चूसते हुए मेरे लहसुन को हल्के-हल्के दांत लगा कर चुसाई करना शुरू कर दिया। इसी के साथ उसने अपना हाथ चूतड़ों पर ले जाकर मेरे गुदा द्वार को सहलाते हुए मेरी बुर की चुसाई करने लगा।

मैं पूरी मस्ती में सिसकारियाँ ‘उफ्फ्फ्फ़ आह सी..’ ले रही थी।
मैं कामुकता से सीत्कार करते हुए बोली- विनय.. अब बस करो.. मेरी बुर में केला पेल दो.. हाय विनय चोदो मुझे.. जितना चाहे चोदो.. अपना पूरा लौड़ा मेरी बुर में पेलो..
आआईईई..

मैं सिसियाते हुए विनए का मुँह अपनी चूत से हटाने लगी और विनय ने भी चूत चुसाई

छोड़ कर मुझे दबोच लिया मैंने अपना एक हाथ ले जाकर उसका मूसल लण्ड पकड़ लिया और उसे सहलाते हुए बोली- विनय.. तुम्हारा लण्ड बहुत बड़ा है.. बहुत मोटा है.. लंबा भी खूब है..।

विनय मस्ती से मुझसे चिपका हुआ था, मैं लण्ड को मसलते बोली- उफ्फफ़्फ़.. यकीन नहीं होता.. इतना मोटा लण्ड मेरी चूत के अन्दर जाने वाला है। उसी पल विनय ने मुझे चूमते हुए मेरी एक टांग को उठा दिया और मैं चूत पर लण्ड लगा कर लण्ड को चूत में घुसने का रास्ता दिखा बैठी।

अगले ही पल एक ही शॉट में विनय ने लण्ड का सुपाड़ा चूत में उतार दिया। मैं उत्तेजना में उसके होंठ चूसने लगी और मैंने अपने पैरों को उसकी कमर पर लपेट दिया। चूचियों को मसलते हुए मैंने अपनी बांहें उसके गले में डाल दीं।
विनय अपने कंधों पर पैर रखवा कर मेरी चूत में लण्ड पेलने लगा, विनय मुझे ठोकने लगा और कस-कस के ठाप पर ठाप लगा कर अपने मोटे लण्ड से मेरी ठुकाई करने लगा।

विनय के लण्ड की मदमस्त चुदाई से मेरी चूत से 'खचाखच.. फचाफच..' की आवाज आ रही थी। मेरे मुँह से, 'ओह्ह्ह.. ऊऊफ़.. आहसीई.. उफ़..' की आवाजें आने लगीं।
मैं अपनी चूत उठा-उठा कर विनय का लण्ड बुर में लेती जा रही थी।

'ऊऊफ़आह.. और पेलो.. ऐसे ही.. चोदो.. मुझे.. मैं ऐसे मोटे लण्ड से चुदने के लिए तड़फ रही हूँ.. आईईईईई सीऊऊह सीईईई आह ऊफ़्फ़फ़.. चोद.. पेल.. मार साले मेरी चूत…'
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !
विनय कस-कस कर अपना लौड़ा डाल कर मेरी चूत को चोद रहा था और मैं अपनी चूत उसके लण्ड पर उछाल-उछाल कर चुदवाती रही।

विनय पूरा ज़ोर लगा कर धक्के पर धक्के लगाता हुआ पूरा लण्ड चूत में जड़ तक डाल

रहा था वो मेरी जबरदस्त चुदाई कर रहा था और मैं सिसकारी लेते हुए बुर चुदवाती जा रही थी।

‘आहसीई.. आउउई.. फाड़ दो.. मेरी चूत.. मसक दो मेरे बोबों को.. और रगड़ कर पेल मेरे राजा.. वाह इसे कहते हैं चुदाई.. चूत के राजा.. मेरी चूत के मैदान में दिखा मर्दागनी.. आआह्ह्ह.. म्म्म्म म्म्मार.. चूतत.. मेरे राजजा.. डालल.. पेलल.. आहसीई… ऊईई.. मैं गई.. मेरे राजा.. लगा धक्का.. कस कस.. कर पेल साले.. मार चूत आआ.. मेरीरी.. सासाली.. चूत.. आह आउइ उउउइ..’ कहते हुए मैंने विनय से चिपकते हुए पानी छोड़ दिया।
‘आह जान.. मैं झड़ रही हूँ.. मेरे सैयां मैं बारी तेरे लण्ड पर.. तेरी बाँहों पर.. पेल दे लण्ड.. मेरी बच्चेदानी तक.. आहहह सी..’

मैं विनय को कस के पकड़ कर झड़ रही थी और विनय मेरी झड़ी हुई चूत पर धक्के पर धक्के लगाते हुए काफी देर तक मुझे रौंदता रहा। मेरी चूत में लण्ड जड़ तक चांप कर झड़ने लगा और मुझको पूरी तरह अपनी बाँहों में कसकर दाब के.. लण्ड से वीर्य की धार छोड़ कर झड़ने लगा। हम दोनों एक-दूसरे को बाँहों में लिए काफी देर तक पड़े रहे।

दोस्तो.. विनय की चुदाई से मेरे तन-मन को बड़ी राहत मिली थी, मैं उसके लण्ड पर फ़िदा हो गई थी।
अभी कहानी जारी है।
neharani9651@gmail.com